उत्तर

महाकवि कालिदास रचित 'मेघदूतम्' खण्डकाव्य रूप में

महान कवि और नाटककार के रूप में महान कवि कालिदास संस्कृत भाषा के उद्भट विद्वान थे। उन्होंने अपनी रचनाओं का आधार पौराणिक कथाओं एवं दर्शन पर आधारित रखा। उनकी विभिन्न रचनाएं श्रेष्ठ मूल तत्व रूप में निहित हैं। कालिदास अपनी विशेष भारतीयों के आदर्श रघु की समग्र राष्ट्रीय चेतना को स्वर देने वाले कवि माने जाते हैं और उनके विद्वान उन्हें राष्ट्रीय कवि के रूप में प्रतिष्ठापित करते हैं।

कवि द्वारा रचित 'मेघदूतम्' कालिदास द्वारा लिखित खण्डकाव्य है। इसमें यक्ष की कथा है जिसे कुबेर अलका से निष्कासित कर देता है। निष्कासित होकर रामगिरि पर्वत पर निवास करता है। वर्षा ऋतु में उसे अपनी प्रेमिका की याद सताने लगती है। कामार्त यक्ष सोचता है कि किसी भी तरह से अलकापुरी लौटना संभव नहीं है, इसलिए वह मेघ के माध्यम से अपना संदेश प्रेमिका तक पहुंचाने का निश्चय करता है। अकेलेपन का पहला दुःख हो रहा है पर कोई संदेशवाहक भी नहीं मिलता है, इसलिए उसने मेघ के माध्यम से अपना संदेश विरहाकुल प्रेमिका तक भेजने की बात सोची। इस प्रकार आषाढ़ के प्रथम दिन आकाश पर उमड़ते मेघों ने कालिदास की कल्पना के साथ मिलकर एक अनन्य कृति की रचना कर दी। मेघदूत की लोकप्रियता का परिचय भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही रही है। जहाँ एक ओर तो ...

टीकाकारों ने इस पर टीकाएँ लिखी हैं। [illegible] में [illegible] कवियों के द्वारा [illegible] होकर [illegible] गई [illegible] लिखी है। [illegible] और [illegible]। प्रस्तुत मेघदूत में उपलब्ध है, यह भारतीय साहित्य में भी आदर्शवादी परम्परा और नैतिक मूल्यों का समुचित स्थान रखता है। कालिदास के परवर्ती कवि बाणभट्ट ने उनकी सूक्तियों की विशेष रूप से प्रशंसा की है। इस विषय में [illegible] कवि की [illegible] (आत्मकथात्मक) रचना माना है। मेघदूत में लगभग 115 पद्य हैं यद्यपि अलग-अलग [illegible] में इन पद्यों की संख्या [illegible] से कुछ अधिक भी मिलती है।

इति

प्रो० [illegible] नारायण झा
[illegible] 11.90 [illegible]
संस्कृत विभाग